ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

अन्दर के पृष्ठों में...

छिता सोरेन ने इच्छाशक्ति से आर्थिक दुश्वारियों को किया दूर (पृष्ठ – 02)

सतत् जीविकोपार्जन योजना के सहयोग से सविता ने भरी उड़ान (पृष्ठ – 03)

सतत् जीविकोपार्जन योजना जिला एवं राज्य स्तरीय गतिविधियां (पृष्ठ – 04)

सतत् जीविकोपार्जन योजना

एक नई राह

माह – अक्टूबर 2022 ।। अंक – 15

पूर्व में पारंपरिक रूप से ताड़ी के व्यवसाय से जुड़े परिवारों पर सतत् जीविकोपार्जन योजना का हुआ सकारात्मक असर

ताड़ी के उत्पादन और बिक्री से पारंपरिक रूप से जुड़े परिवारों के लिए सतत् जीविकोपार्जन योजना, उद्यमिता एवं स्वरोजगार का साधन बन रहा है। सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़े अधिकांश परिवारों के पास अपना काम है। स्वरोजगार, नियमित आय और जीवन में आए बदलावों से दीदियां समाज में गरिमापूर्ण जीवन व्यतीत कर रही हैं। ताड़ी के व्यवसाय में पहले उन्हें अनिश्चितता, अपमान एवं अत्यंत गरीबी का सामना करना पड़ता था। समाज में उन्हें हेय दृष्टि से देखा जाता था। ताड़ी के व्यवसाय से जुड़े परिवारों को मौसमी बेरोजगारी का भी सामना करना पड़ता था। वहीं, अब वे इस योजना का लाभ लेकर आर्थिक स्वावलंबन के साथ सम्मानजनक जीवन व्यतीत कर रही हैं।

समाज के अंतिम पयदान पर जीवनयापन कर रहे ऐसे अत्यंत निर्धन परिवारों में उद्यमिता का विकास होना एक बड़ा बदलाव है। सतत् जीविकोपार्जन योजना से स्वरोजगार एवं नियमित आय का साधन होने से उनके दैनिक जीवन, रहन–सहन, खान–पान, पोषण, बच्चों की पढ़ाई पहले से बेहतर हुई है। नियमित बचत उनके जीवन व्यवहार में शामिल हुआ है। जिससे वे अपने लिए उन्नति की योजना बनाने में सक्षम हुए हैं। सतत् जीविकोपार्जन योजना का लाभ लेकर वे न सिर्फ स्वरोजगार (सूक्ष्म उद्यम, कृषि, पशुपालन) कर रहे हैं बल्कि उसे आगे बढ़ाने के लिए प्रयासरत भी हैं। इस योजना का लाभ लेकर वे कर्मशील खुशहाल वर्त्तमान एवं भविष्योन्मुखी जीवन शैली अपना रहे हैं। वे तेजी से समाज की मुख्य धारा से जुड़ पा रहे हैं।

बिहार में पूर्ण शराबबंदी (अप्रैल 2016) कानून लागू होने से पारंपरिक रूप से ताड़ी के व्यवसाय से जुड़े परिवारों के सामने आय का संकट आ गया था। इससे प्रभावित परिवारों एवं अन्य अत्यंत गरीब परिवारों को स्वरोजगार के साधन उपलब्ध कराने के लिए अगस्त 2018 में बिहार सरकार ने सतत् जीविकोपार्जन योजना की शुरुआत की। सतत् जीविकोपार्जन योजना उनके लिए स्वरोजगार, उद्यमिता का दीर्घकालिक साधन बनकर आया। सतत् जीविकोपार्जन योजना से अब तक कुल 1.47 लाख परिवारों को लाभ मिला है।

लाभान्वित परिवारों ने इस योजना का लाभ लेकर क्रमिक वृद्धि (ग्रेजुएशन एप्रोच) प्राप्त किया है। ऐसे परिवार जिन्हें अपने स्वरोजगार से कम से कम चार हजार रुपये की मासिक आय हो रही है, साथ ही जिनकी परिसंपत्ति में पचास प्रतिशत की वृद्धि हुई है और कम से कम तीन महीने के अंतराल पर दो सौ पच्चास रुपये की मासिक बचत हुई है, उन्हें इस योजना के तहत ग्रेजुएशन कर चुके परिवारों में शामिल कर लिया जाता है। लाभार्थी परिवारों को राशन कार्ड, बिजली कनेक्शन, सामाजिक सुरक्षा से जुड़े विधवा, विकलांग, वृद्धा पेंशन आदि की सुविधाएँ पहुँचाई गई है।

जीविका के माध्यम से सतत् जीविकोपार्जन योजना की लाभार्थी दीदियों का क्षमतावर्धन किया गया है। स्वयं सहायता समूह की बैठक में नियमित रूप से भाग लेने से उनके आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है। बैंकिंग, बचत, उद्यमिता, सामूहिकता उनके जीवन व्यवहार में शामिल हुआ है। इससे वे सामाजिक – आर्थिक सशक्तीकरण की राह पर मजबूती से कदम बढ़ा पा रहीं हैं।

छिता सोरेन ने इच्छाशक्ति से आर्थिक दुश्वारियों को किया दूर

किशनगंज जिला के कोचाधामन प्रखंड की रहने वाली छिता सोरेन ने अपनी इच्छाशक्ति और निरंतर चुनौतियों का सामना करने की प्रवृत्ति से आर्थिक दुश्वारियों को दूर किया है। सात साल पहले दीदी के पति ने उन्हें तलाक दे दिया था। अकेला जीवन, आय का कोई निश्चित साधन नहीं। तीन बच्चों की जिम्मेदारी दीदी के अकेले कंधों पर आ गई। शुरुआत में दीदी, देशी शराब बनाने के काम से जुड़ी थीं। इसी बीच अप्रैल 2016 से बिहार में शराबबंदी लागू हुई। इस वजह से दीदी को नये आय के साधन की तलाश थी। इसी दौरान एक दिन छिता दीदी को समूह की बैठक में सतत् जीविकोपार्जन योजना के बारे में पता चला। दीदी ने बैठक में इस योजना का लाभ लेने की इच्छा जाहिर की। अनुसूचित जनजाति समुदाय से आने वाली छिता सोरेन को जुलाई 2019 में इस योजना में शामिल किया गया। उन्होंने एसजेवाई योजना के तहत मिली राशि से मनिहारी का सामान फेरी लगाकर बेचने का काम शुरू किया। दीदी को इस काम से महीने में आठ से दस हजार रुपए की आमदनी हो जाती है। दीदी ने बताया कि व्यवसाय की आमदनी से उन्होंने पुराने घर की मरम्मत कराई है। साथ ही डेढ़ बीघा जमीन लीज पर लेकर खेती भी करती हैं। दीदी बताती हैं कि खेती से भी उन्हें साल में पच्चीस से तीस हजार रुपए की अतिरिक्त आमदनी हो जाती है। साथ ही उन्होंने बकरी पालन का कार्य भी शुरू किया है। इससे भी अच्छी आमदनी हो जाती है। उन्होंने घर के लिए फर्नीचर, बर्त्तन और भी कई जरूरत के सामान खरीदा है। तीनों बच्चों की पढ़ाई को लेकर भी दीदी काफी उत्साही नजर आती हैं।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से जीवन हुआ खुशहाल

रोहतास जिला के काराकाट प्रखंड अन्तर्गत नन्हों गाँव की रीता देवी का जीवन मुश्किलों से भरा था। पति के अचानक सड़क हादसे में मृत्यु के उपरान्त, तीन लड़कियों तथा एक लड़के के पालन–पोषण का बोझ उनके कंधे पर आ गया। वह बिलकुल असहाय तथा टूट चुकी थी। परिस्थिति ऐसी थी कि एक वक्त के खाने के लिए भी इन्हें सोचना पड़ता था। पैसे के अभाव में वह कोई रोजगार शुरू करने में भी असमर्थ थी। वह अपने गाँव में ही चौका–बर्तन का काम करके अपना तथा अपने बच्चों का भरण–पोषण कर रही थी। इनकी स्थिति को देखते हुए जीविका ग्राम संगठन के द्वारा इनका चयन सतत् जीविकोपार्जन योजना के लिए किया गया। योजना के तहत इन्होनें अपने ही घर में श्रृंगार दुकान की शुरुआत की। धीरे–धीरे दुकान से आमदनी होने लगी और इनकी आर्थिक स्थिति सुधरने लगी। दुकान की आमदनी से वह भैंस, बकरी तथा मुर्गी पालन भी कर रही है।

अब रीता देवी का जीवन बिलकुल बदल गया है। दुकान की आमदनी से बचत करके उन्होंने अपनी बड़ी बेटी की शादी की जो अपने ससुराल में खुशहाल है। उन्होंने अपनी एक बेटी को सिलाई का काम सिखाया। वह श्रृंगार दुकान में ही बैठ कर सिलाई का काम करती है। इनकी छोटी बेटी स्नातक तथा लड़का इंटर में पढ़ाई कर रहे हैं। रीता देवी अपने दुकान में मेहनत करके अपने जीवन को सुरक्षित रखते हुए अपने बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए काम कर रही है। अब वह अपने बच्चों के साथ खुशहाल जीवन यापन कर रही है। सतत् जीविकोपार्जन योजना ने रीता देवी तथा उनके परिवार को दु :ख के काले बादल से बाहर निकाल कर सुखी जीवन की ओर अग्रसर किया है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से मिली सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा

संजू देवी खगड़िया जिला के अलौली प्रखंड की स्थायी निवासी है। संजू देवी कान्ति समूह, उपासना ग्राम संगठन तथा स्वाभिमान संकुल संघ से जुडी है। संजू देवी के पति स्वराज कुमार के निधन के बाद संजू बिल्कुल अकेली हो गयी और निरक्षर होने के कारण सिर्फ मजदूरी करके अपना घर चलाती थी। दीदी के चार लड़के हैं और चारो स्कूल में पढ़ते थे। मजदूरी कर के भी दीदी की मासिक कमाई मात्र 800 रुपये ही हो पाती थी। इतने कम पैसों से संजू दीदी अपने चार बेटों को पेट भर खाना भी नहीं दे पाती थीं, बच्चों की पढाई तो दूर कि बात थी। इतने कम पैसों से परिवार का पेट पालना आसान नहीं था।

2018 में दीदी को सतत् जीविकोपार्जन योजना से जोड़ा गया। संजू दीदी को उनके ग्राम संगठन के द्वारा एक गुमटी खोलकर दिया गया, जिसमें दीदी के द्वारा मनिहारी (श्रृंगार) का दुकान खोला गया। शुरुआत में दीदी सिर्फ श्रृंगार का सामान बेचती थी परन्तु जैसे–जैसे दीदी की दुकान चल पड़ी फिर दीदी ने अपने उसी दुकान में फलों की बिक्री भी शुरू कर दी। अब संजू दीदी मन लगाकर दुकान चलाती हैं और इसमें उनके बच्चे भी उनकी मदद करते हैं। इस दुकान से दीदी की मासिक आमदनी महीने के 7000 रूपये तक हो जाती है। अब संजू दीदी अपने परिवार को दो समय का भोजन उपलब्ध करा पा रही है। साथ ही दीदी के बच्चे पढाई भी कर रहे है। सिर्फ यही नहीं, दीदी को नल –जल योजना, विधवा पेंशन योजना जैसे सामाजिक योजनाओं से जोड़ा गया है। दीदी को उज्जवला योजना के तहत रसोई गैस भी उपलब्ध कराया गया है। दीदी के घर शौचालय का निर्माण कराया गया है। साथ ही दीदी का बीमा भी कराया गया है। इन सब कारणों से दीदी खुद को सामाजिक और आर्थिक तौर पर अब सुरक्षित महसूस करने लगी हैं। संजू दीदी की इच्छा है कि वह अपने दुकान को और बड़ा कर सकें, जिससे उनकी मासिक आमदनी और बढ़ सके। जिससे वह अपने बच्चों को अच्छे से अच्छे स्कूल में पढ़ा सकें। अपने ज़िन्दगी में आये इस अच्छे बदलाव के लिए संजू दीदी जीविका को दिल से धन्यवाद देती है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना के सहयोग से सविता देवी ने भरी उड़ान

सविता देवी अरवल जिले के प्रखंड अरवल सदर के पंचायत खमैनी के गाँव राजाबीघा की रहने वाली हैं। जीवन के शुरुआत से ही इन्हें काफी संघर्षों का सामना करना पड़ा। वह पैर से दिव्यांग हैं परन्तु मन में मज़बूत इच्छाशक्ति होने के कारण वह हमेशा आगे बढ़ने के बारे में सोचती रही। इसी हौसलें के साथ उन्होंने स्नातक तक की पढाई पूरी की। उनकी पारिवारिक स्थिति काफी दयनीय थी। इनके पति भी दिव्यांग हैं। तब साल 2019 विष्णु जीविका महिला ग्राम संगठन ने उनकी गरीबी और लाचारी को देखते हुए उन्हें सतत् जीविकोपार्जन योजना के अंतर्गत लाभार्थी के रूप में चुना। सविता देवी को रोजगार करने के लिए सतत् जीविकोपार्जन योजना के अतर्गत जीविकोपार्जन निवेश निधि से एक किराना दुकान खुलवाया गया। दुकान खुलने के बाद धीरे धीरे उनकी आमदनी बढ़ने लगी। प्रतिदिन किराना दुकान से 150–200 रूपये की आमदनी होने लगी। समय बीतता गया, पूंजी बढ़ती गई। सविता देवी ने दुकान को विस्तार करना शुरु किया और अपने दुकान से ग्राहकों की मांग को देखते हुए दुकान में श्रृंगार के सामान को भी बेचना शुरू किया। सविता देवी अपने गाँव के 8–10 बच्चों को घर में शिक्षा भी देने लगी। फिर उन्होंने धीरे–धीरे अपने बचत के पैसों और अच्छी आमदनी होने के कारण गाँव में एक प्ले स्कूल खोली हैं, जिसमें वर्तमान में 44 बच्चें पढ़ रहे हैं। वह बच्चों को अच्छी शिक्षा देने के लिए तीन शिक्षक को भी रोजगार दिया है। उन्होंने बकरीपालन भी शुरू कर दिया है। स्कूल का विस्तार होने से उन्होंने आवासीय की व्यवस्था शुरू कर दी हैं, अभी वर्तमान में 11 आवासीय बच्चे पढ़ रहे हैं। सभी तरह की गतिविधियों से उनकी मासिक आमदनी 15,000 रूपये से लेकर 20,000 तक की हो जाती है। अपने सोच और सतत् जीविकोपार्जन योजना के सहयोग से खुद तों आत्मनिर्भर बन रही हैं, साथ ही साथ अन्य लोगों को भी आत्मनिर्भर बनाने हेतु अग्रसर हैं।

सतत् जीविकोपार्जन योजना
जिला एवं राज्य स्तरीय गतिविधियां

अत्यंत गरीब परिवारों के बीच सेनेटरी पैड का वितरण

'नई धरती' एक गैर सरकारी संगठन है जो किशोरियों और महिलाओं की शिक्षा, प्रजनन स्वास्थ्य, व्यवहार परिवर्तन और समग्र विकास के लिए काम करती है। सक्षम प्राधिकार की स्वीकृति से नई धरती संगठन ने सतत् जीविकोपर्जन योजना के तहत अत्यंत गरीब परिवारों को प्रति माह 2,500 पैड वितरित करने का निर्णय लिया है। पहले महीने में इस संगठन ने पटना जिले के दानापुर, फुलवारी, पुनपुन, संपतचक, धनरुआ और वैशाली जिले के हाजीपुर प्रखंड में सतत् जीविकोपर्जन योजना अंतर्गत परिवारों को 2300 से अधिक पैड वितरित किया है। लाभार्थियों को स्वच्छता बनाए रखने के लिए सेनेटरी पैड की सुरक्षा और उपयोग पर जागरूक भी किया गया।

सरस मेले में एसजेवाई दीदियों की भागीदारी

बिहार सरस मेले में बिहार के विभिन्न जिलों से सतत् जीविकोपर्जन योजना अंतर्गत लाभार्थियों ने भाग लिया। सरस मेला के माध्यम से दीदियों ने अपने आजीविका का विस्तार किया और गरीबी से बाहर आने में सक्षम बन रही हैं। सरस मेला में दीदियों ने पारंपरिक रूप से बने उत्पादों का प्रदर्शन और बिक्री किया। साथ ही सरस मेला ने दीदियों को एक बेहतर व्यावसायिक समझ एवं उद्यमी विशेषज्ञता के लिए अवसर भी दिया है। सरस मेला 2022 में रोहतास जिले के नोखा ब्लॉक से किरण देवी, मुंगेर जिले से पुतुल देवी एवं बांका जिले के रजौन ब्लॉक की निर्मला देवी ने भाग लिया। दीदियों ने चूड़ी, सॉफ्ट टॉयज, बाँस का विभिन्न उत्पादों का स्टॉल लगाया।

उद्यम स्थापना अभियान

मिशन स्वावलंबन के तहत राज्य के 38 जिलों में 19 सितंबर से 28 सितंबर 22 तक 7 दिनों के लिए उद्यम स्थापना अभियान चलाया गया। अति गरीबों के लिए एक स्थायी आजीविका स्थापित करने के लिए परिसंपत्ति को आजीविका निवेश कोष के रूप में एलआईएफ 1 और एलआईएफ 2 के रूप में स्थानांतरित किया जाता है। ग्राम संगठन से अनुमोदन के माध्यम से इस माह कुल 9940 सूक्ष्म उद्यम स्थापित किए गए हैं।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री अजीत रंजन, राज्य परियोजना प्रबंधक (अनुश्रवण एवं मूल्यांकन)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी –परियोजना प्रबंधक (संचार)
- श्री रतिस मोहन –परियोजना प्रबंधक (सामाजिक सुरक्षा)

संकलन टीम
- श्री बिप्लव सरकार – प्रबंधक संचार
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, समस्तीपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, पूर्णिया
- श्री विकास कुमार राव – प्रबंधक संचार, सुपौल